भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १०-१६ अक्टुबर, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि व कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

	वास्तविक वर्षा (मिमी)								मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी)					सलाह
	सितम्बर	अक्टुबर												
दिनांक	29to5	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
पंजाब														फसल की स्थिति अच्छी है। चुनाई का कार्य तीव्रगति से चल रहा है। कुछ गांवों में, मुख्यतः अबोहर तथा फाजिल्का क्षेत्र में, कुछ खेतों में सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई है। इस समय किसी भी कीटनाषक के छिड़काव से बचने की सलाह दी जाती है। इससे कपास में कीटनाषक अवषेषों के संदूषण से बचा जा सकेगा। सफेद मक्खी से कपास पर काली फफुँद विकसित गूलरों से कपास चुनते रहें। एक तिहाई गूलरों के प्रस्फुटित होने के बाद फसल में सिंचाई न करने की किसानों को सलाह दी जाती है। प्रातः काल जल्दी कपास की चुनाई न करें। सूक्ष्म जीवों व्दारा नुकसान से बचने के लिए भण्डारण से पहले कपास को सुखा लें।
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	1.8	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा														
सिरसा	12	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	3.9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान														
हनुमानगढ़	1.9	0	0	0	0	0	0.6	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	54	3.1	1	6	14	0	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा														फसल शिर्ष गूलर विकास अवस्था में है। भारी वर्षा होने के समय अतिरिक्त वर्षाजल की निकास करने की किसानों को
कोरापुट	60	0	0	10	26	2.4	11	2.7	0	0	0	0	0	

कालाहांडी	81	0	0	30	0	30	27	0	0	0	0	0	0	सलाह दी जाती है। बहुत से स्थानों पर जैसिड का प्रकोप देखा जा रहा है। लकिन इसे संवेदनषील संकरों का छोडकर उपज में नुकसान होने की संभावना नहीं है। अतः खेत से अतिरिक्त पानी की निकासी करना महत्वपूर्ण हो जाता है। कलियों तथा गूलरों से झड़न की रोकथाम के लिए फसल पर प्लानोफिक्स का छिड़काव करें। फसल में नत्र+पोटाष+सल्फर उर्वरकों के अनुप्रयोग का अच्छा प्रतिसाद मिलेगा। यदि विगत 10 दिनों में उर्वरकों का अनुप्रयोग नहीं किया गया है तो मृदा में पर्याप्त नमी होने पर अभी उर्वरक अनुप्रयोग यिा जा सकता है। यूरिया 20 किग्रा, 10-15 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाष प्रति एकड़ अनुप्रयोग तथा यूरिया 2% (20 ग्रा/ली) अथवा 1-2% (10-20 ग्रा/ली) पोटेषियम नाईट्रेट के साथ 1.0% (10ग्रा/ली) मेग्नीषियम सल्फेट जैसे पोषकों का 2-3 बार 7 दिनों के अंतराल में फसल पर छिड़काव करें। गुलाबी सूंडी की निगरानी के लिए 4-5 ट्रैप/हे की दर से फसल में स्थापित करें। इस वेब-साइट में दिए गए 'कपास स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यनीति' की सिफारिषों के अनुसार रोकथाम के उपाय प्रारंभ किए जा सकते हैं।
बोलांगीर	28	2.7	5.5	13	0	93	2.8	0	0	0	0	0	0	
गुजरात														फसल शिर्ष गूलर विकास अवस्था में है। भारी वर्षा के समय अतिरिक्त वर्षाजल की निकासी करने की किसानों को सलाह दी जाती है। कई स्थानों पर जैसिड का प्रकोप देखा जा रहा है लकिन अति संवेदनषील संकरों को छोड़कर इस कीट का उपज में नुकसान होने की संभावना नहीं है। अतः अतिरिक्त पानी की निकासी करना आवष्यक है। कलियों तथा गूलरों के झड़न की रोकथाम के लिए फसल पर प्लानोफिक्स का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। नत्र+पोटाष+ सल्फर के अनुप्रयोग के लिए
अमरेली	52	23	11	25	16	0	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	49	17	5.4	5.8	6.2	0	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	85	77	14	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	66	46	7	2.4	5.4	0	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	48	36	7.6	7.8	2.1	1.2	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	24	11	9.9	6.9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	27	12	9.1	6.1	0.6	0	0	0	0	0	0	0	0	

अहमदाबाद	27	2.6	10	15	0	0	0	0	0	0	0	0	0	फसल अच्छा प्रतिसाद देगी। यदि विगत 10 दिनों में उर्वरकों का अनुप्रयोग नहीं किया गया है तो अभी पर्याप्त मृदा नमी उपलब्ध होने पर उर्वरकों का अनुप्रयोग किया जा सकता है। यूरिया 20 किग्रा, 10-15 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाष प्रति एकड़ मृदा अनुप्रयोग करें तथा इसके साथ यूरिया 2% (20 ग्रा/ली) अथवा 1-2% (10-20 ग्रा/ली) पोटेषियम नाईट्रेट के साथ 1.0% मेग्नीषियम सल्फेट के 2-3 बार 7 दिनों के अंतराल पर करने की सलाह दी जाती है। कुछ गांवों में गुलाबी सूंडी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया है। गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए 4-5 फीरोमोन ट्रैप /हे फसल में तुरन्त स्थापित करें। इस वेब-साइट में दिए गए 'कपास स्वास्थय प्रबंधन कार्यनीतियाँ' की सिफारिषों के अनुसार नियंत्रण उपाय प्रारंभ किए जा सकते हैं।
वडोदरा	33	21	11	5.2	0	0.3	0.3	0.2	0	0	0	0	0	
पाटन	47	29	5.8	10	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	36	22	15	16	0.1	0	0	0	0	0	0	0	0	
मध्य प्रदेश														रोगों का प्रकोप रिकार्ड नहीं किया गया है। कुछ गांवों में रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक हो गई है। संस्तुत नियंत्रण उपायों को प्रारंभ किया जा सकता है।
खरगोन	55	2.9	0	0	9.3	16	0.5	0	0	0	0	0	0	
धार	80	2.9	5.9	0	22	0.1	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	59	3.7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र														फसल शिर्ष गूलर विकास अवस्था में है। किसानों को सलाह दी जाती है कि भारी वर्षा के समय संचित अतिरिक्त वर्षाजल की निकासी करें। कई स्थानों पर जैसिड का प्रकोप देखा जा रहा है लेकिन अति संवेदनषील संकरों को छोडकर इस कीट का उपज पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पडेगा। अतः अतिरिक्त वर्षाजल की निकासी करना महत्वपूर्ण हो जाता है। कलियों तथा गूलरों के झड़न की रोकथाम के लिए फसल पर प्लोनोफिक्स के छिड़काव की सिफारिष की जाती है। नत्र+पोटाष+सल्फर उर्वरकों के लिए समय फसल में अच्छा प्रतिसाद मिलेगा। यदि विगत 10 दिनों
धुले	69	13	2.8	0	0	1.6	0	0	0	0	0	0	0	
नांदूरबार	42	10	5.2	0.1	0	13	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	52	8.8	5.7	0.2	0	13	0.2	0.1	1	0	0	0	0	
अहमदनगर	105	3.9	0.3	0	1.6	1.4	0.1	1.1	1	0	0	0	0	
औरंगाबाद	57	8.2	0.1	0	0	7.5	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	77	6.7	0.7	0	0	4	0	3.2	0	0	0	0	0	
बीड़	99	1.8	1	0	0	4.6	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	79	3.4	0.4	0	1.7	35	0.4	0	0	0	0	0	0	

परभणी	76	3.3	0	0	0	24	0	0	0	0	0	0	0
हिंगोली	69	0.5	0	0	0	47	0	0	0	0	0	0	0
बुलढाना	57	6.8	1	0	0	3.2	0.7	0	0	0	0	0	0
अकोला	58	6.5	3.1	0	0	13	0	0	0	0	0	0	0
वासिम	49	5.8	3.2	0	0	18	0	0	0	0	0	0	0
अमरावती	53	0.5	7.6	0	3.7	19	0	2	0	0	0	0	0
यवतमाल	47	4.2	3.4	0	6.7	23	0	0.5	0	0	0	0	0
वर्धा	42	0.3	1.8	0	20	15	0	0.6	0	0	0	0	0
नागपुर	30	0	12	9	16	12	0	2.1	0	0	0	0	0
चन्द्रपुर	61	2	7	1.2	23	25	6.9	0.1	0	0	0	0	0
तेलंगाना													
आदिलाबाद	37	1.6	2.5	0	34	17	11	0	0	0	0	0	0
वारंगल	5.8	0.3	0.3	1.3	24	16	14	0	0	0	0	0	0
खम्मन	38	1.1	0.2	6.2	13	40	11	0	0	0	0	0	0
कारिंगर	13	2	0.1	0	54	16	6.6	0	0	0	0	0	0
नालगोंडा	24	0	0.2	0	10	15	2.2	0	0	0	0	0	0
महबूबनगर	12	0.1	0	0	0.4	4	2.1	0	0	0	0	0	0
आंध्रप्रदेश													
गुन्टूर	47	0.1	3	0.8	8.6	19	1.7	0	5	0	0	0	0
प्रकासम	6.8	0.2	0.3	0.2	1.2	0.8	4	0	4	8	0	0	0

में उर्वरकों का अनुप्रयोग नहीं किया गया है तो खेत में पर्याप्त मृदा नमी उपलब्ध होने पर इनका अनुप्रयोग करें। यूरिया 20 किग्रा, 10-15 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाष प्रति एकड़ मृदा अनुप्रयोग के बाद फसल पर यूरिया 2% (20 ग्रा/ली) अथवा 1-2% (10द्द20 ग्रा/ली) पोटेषियम नाईट्रेट के साथ 1.0% (10ग्रा/ली) मेग्नीषियम सल्फेट के 2-3 छिड़काव 7 दिनों के अंतराल पर करें। नांदूरबार, धुले, जालना तथा जलगाव जिलों के कुछ गांवों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया। गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए फसल में 4-5 फीरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टर फसल में तुरन्त स्थापित करें। इस वेब-साइट में उपलब्ध 'कपास स्वास्थय प्रबंधन कार्यनीतियाँ' की सिफारिषों के अनुसार नियंत्रण उपाय प्रारंभ किए जा सकते हैं।

तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेष के महबूबनगर तथा प्रकाषम जिलों को छोड़कर सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में भारी वर्षा हुई है। फसल गूलर निर्माण अवस्था में प्रवेष कर चुकी है। लगातार वर्षा होने से फसल का पीला पड़ना, मुरझाकर लटकना, तथा खडी फसल में पौधों के मुरझान के लक्षण आंध्र के कुछ क्षत्रों में देखे जा रहे हैं। खेत से अतिरिक्त वर्षाजल की निकासी करना महत्वपूर्ण है। कलियों तथा गूलरों के झड़न को रोकने के लिए फसल पर प्लानोफिक्स का छिड़काव करने की सिफारिष की जाती है। फसल में इस समय नत्र+पोटाष+सल्फर अनुप्रयोग का अच्छा प्रतिसाद मिलेगा। यदि उर्वरकों का विगत 10 दिनों के अंदर अनुप्रयोग नहीं किया गया है और मृदा में पर्याप्त नमी विद्यमान है तो उर्वरकों का अनुप्रयोग करें। यूरिया 20 किग्रा, 10-15 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाष प्रति एकड़ के मृदा

														अनुप्रयोग के साथ फसल पर यूरिया 2% (20ग्रा/ली) अथवा 1-2% (10-20 ग्रा/ली) पोटेषियम नाईट्रेट के साथ 1.0% (10ग्रा/ली) मेग्नीषियम सल्फेट जैसे पोषकों का 2-3 बार 7 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करने की सिफारिष की जाती है। कुछ गांवों में गुलाबी सूंडी का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया है। गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए फीरोमोन ट्रैप 4-5/हे संख्या में तुरन्त फसल में स्थापित करें। इस वेब-साइट में दिए गए 'कपास स्वास्थय प्रबंधन कार्यनीतियाँ' नोट की सिफारिषों के अनुसार इसकी रोकथम के उपायों को प्रारंभ किया जा सकता हैं।
कर्नाटक														फसल गूलर निर्माण अवस्था में है। जिन क्षेत्रों में विगत 20-30 दिनों से सूखाकाल चल रहा है वहाँ सुविधा होने पर फसल की सिंचाई करें। मिरिड बग, मिज तथा फूलकीट (थ्रिप्स) एवं एल्टरनेरिया पत्ती धब्बा राज्य के कई भागों में दर्ज किया गया है। इस वेब-साइट पर दिए गए 'कपास स्वास्थय प्रबंधन कार्यनीतियाँ' नोट की सिफारिषों के अनुसार रोकथाम के उपाय करें। कुछ गांवों में गुलाबी सूँडी का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया है। गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए 4-5 फीरोमोन ट्रैप/हे फसल में तुरन्त स्थापित करें। इस कीट की रोकथाम के उपाय भी 'कपास स्वास्थय प्रबंधन कार्यनीतियाँ' नोट में दी गई सिफारिषों के अनुसार प्रारंभ करें।
धारवाड़	26	0	0	0	0	0	0	0.5	6.8	6	0	0	0	
हवेरी	7.8	0	0	0	0	0	0.2	6.9	4.2	3.7	1.2	0	0	
मैसूर	3.3	0	0	0	0	0	0	0	0	4.2	52	7.6	15	
तामिलनाडु														त्रिची को छोडकर अधिकांष कपास उत्पादक क्षेत्रों में विगत सप्ताह सूखाकाल रहा। यदि उर्वरकों का मृदा अनुप्रयोग अभी तक नहीं किया गया है तो नत्र तथा पोटाष उर्वरकों का अनुप्रयोग करने की सिफारिष की जाती है। पौधों पर मिट्टी
पेरंबलुर	34	2.5	0	0	0	0	0	0	0	5	6	0	0	
सलेम	4.8	0.2	0	0	0	0	0	0	4	8	10	2	4.1	
त्रिची	33	28	1.4	1.4	0	0	0	0	2	8	8	3	0	

विरडुनगर	4.7	0	0.1	0	0	0	0	0	3	3	5	6	25	चढ़ानें का कार्य भी पूरा करें। खरपतवारों से फसल को मुक्त रखने के लिए 45-60 दिनों की फसल में हाथ से निराई करने का सुझाव दिया जाता है। मौसम की परिस्थिति के कारण रस-चूषक कीटों की संख्या लगातार देखी जा रही है। रोगों का प्रकाप दर्ज नहीं किया गया है। कुछ गांवों के कुछ खेतों में विषषतः संवेदनषील संकरों में जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड किया गया है। इस वेब-साइट पर दिए गए 'कपास स्वास्थय प्रबंधन कार्यनीतियाँ' पर नोट में दी गई सिफारिषों के अनुसार नियंत्रण उपाय प्रारंभ किए जा सकते है।

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: उल्हास नंदनकर**,** मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग तथा प्रभारी, वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधीक्षक**,** केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)